कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

M.A SEM-II
Paper -5

प्रश्न- महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके युग का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर- महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर नामक ग्राम में हुआ था। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी की विद्वता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि पूरे एक युग का नाम इनके नाम से जाना जाता है। द्विवेदी युग का नामकरण इन्ही के व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर किया गया। भारतेन्दु युग यदि आधुनिक काल का प्रवेश द्वार है तो द्विवेदी युग उसका विकसित एवं पल्लवित होने का अवसर प्राप्त हुआ जो भारतेन्दु युग में प्रारंभ हुई थी। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन कर हिन्दी जगत की महान सेवा की और हिन्दी साहित्य की दिशा एवं दशा को बदलने में अभूतपूर्व योगदान दिया। सन 1903 में ये सरस्वती पत्रिका के संपादक बने और 1920 तक बड़े परिश्रम और लगन से कार्य किया।

'काव्य मंजूषा' 'सुमन' (1923) 'काव्यकुब्ज-अबला-विलाप' (मौलिक पद्य) 'गंगालहरी' 'ऋतुतरंगिणी' 'कुमारसम्भवसार' (अनुदित) आदि द्विवेदी जी की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से कवियों नायिका भेद जैसे विषय छोड़कर विविध विषयों पर कविता लिखने की प्रेरणा दी, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा को त्यागकर खड़ी बोली का प्रयोग करने का सुझाव दिया जिसके गद्य और पद्य की भाषा एक हो सके। द्विवेदी जी ने 'कवि कर्तव्य' जैसे निबंधों द्वारा कवियों का उनके कर्तव्य का बोध कराते हुए अनेक दिशा-निर्देश दिए। इनका हिन्दी साहित्य में योगदान एक सर्जक के रूप में इतना नहीं है जितना एक विचारक, दिशा निर्देशक, चिन्तक

Scanned with CamScanner

एवं नियामक के रूप में है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल वस्तुतः जागरण का संदेश लेकर आया है। इस नव जागरण की लहर को जन जन तक पहुँचाने में 'सरस्वती' पत्रिका का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त प्रभा, मर्यादा पत्रिका को भी यह श्रेय जाता है। द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका में ऐसे लेखों को प्रकाशित किया जिन्होंने नवजागरण की लहर को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'हजारी प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण' में सरस्वती पत्रिका से उद्धरण देकर इस बात को पुष्ट किया है।

मैथिली शरण गुप्त, गोपाल शरण सिंह, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि ने महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रेरणा लेकर तथा उनके आदर्शों को लेकर आगे बढ़ने का कार्य किया है। बहुत सारे कवि तो ब्रजभाषा में कविता लिख रहे थे तथा उनकी विषयवस्तु एवं शैली प्राचीन पद्धति पर थी, अब द्विवेदी जी एवं सरस्वती पत्रिका से प्रभावित होकर खड़ी बोली में कविता लिखने लगे। ऐसे कवियों में अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीधर पाठक, नाथूराम शर्मा 'शंकर' तथा राय देवी प्रसाद 'पूर्ण' आदि प्रमुख हैं। इनकी कविताएँ नवजागरण, राष्ट्रीयता, स्वदेशानुराग एवं स्वदेशी भावना से परिपूर्ण हैं। सरस्वती पत्रिका ने कवियों की एक नयी पौध तैयार की। उनकी प्रेरणा से केवल केवल भाषा के क्षेत्र में ही परिवर्तन नहीं हुआ अपितु छंदों के क्षेत्र में भी परिवर्तन दिखता है। अब परंपरागत छंद प्रयोग के साथ-साथ संस्कृत के वर्णवृत्तों का प्रयोग भी कविगण प्रचुरता से करने लगे।

Scanned with CamScanner

Date
Page

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से अनेक कवियों ने नवीन विषयों पर कविता लिखी। उनके एक निबंध 'कवियों में उर्मिला विषयक उदासीनता' से प्रेरित होकर मैथिली शरण गुप्त ने चिर उपेक्षित उर्मिला को महत्व देते हुए 'साकेत' नामक महाकाव्य की रचना की। रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि द्विवेदी युग के ही कवि हैं। इस युग के कवियों में राष्ट्रीयता, नैतिकता, आदर्शवादिता आदि प्रचुर मात्रा में भरे थे। इस युग में काव्य रूपों में विविधता के साथ साथ छन्दों में भी विविधता थी। सामाजिक समस्याओं के चित्रण ने आम जन को प्रभावित किया। खड़ी बोली को परिमार्जित करने, संस्कारित करने तथा व्याकरणिक शुद्धता प्रदान करने में 'सरस्वती' पत्रिका का अविस्मरणीय योगदान है।

सारतः कहा जा सकता है कि द्विवेदी युग में भाषा और साहित्य दोनों ही क्षेत्र में परिष्कार किया गया। इस युग में ज्ञान का प्रचार प्रसार तो हुआ ही कितने ही नए लेखक और कवि प्रचार प्रसार में आए। भाषा संस्कार हुआ समाज सुधार, देशप्रेम, चरित्र निर्माण की भावनाएँ विकसित हुई। देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता विकसित करने में इस युग का विशिष्ट योगदान है।

Scanned with CamScanner